International Journal of Sociology and Political Science
www.sociologyjournal.in
Online ISSN: 2664-7745
Received: 01-08-2026, Accepted: 31-08-2026, Published: 15-09-2026
Volume 8, Issue 3, 2026, Page No. 172-177

कल्याणकारी राजनीति और महिला राजनीतिक: बिहार में महिला मतदाताओं की बढ़ती भूमिका का अध्ययन

डॉ. अनुप्रिया कुमारी
असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, वाई.एन. कॉलेज, दिघवारा, जय प्रकाश विश्वविद्यालय, आंध्र प्रदेश, भारत
DOI: https://doi.org/10.66856/ijsps.2026.8.3.8089

सारांश
प्रस्तुत अध्ययन में बिहार में महिला मतदाताओं की बढ़ती राजनीतिक भागीदारी, कल्याणकारी योजनाओं के प्रभाव तथा उनके बदलते चुनावी व्यवहार का विश्लेषण किया जाएगा। बिहार की राजनीति में पिछले कुछ वर्षों में महिला मतदाताओं की मतदान भागीदारी और राजनीतिक सक्रियता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है, जिसने चुनावी राजनीति की प्रकृति तथा राजनीतिक दलों की रणनीतियों को भी प्रभावित किया है। अध्ययन का मुख्य उद्देश्य यह समझना है कि महिलाओं के बढ़ते मतदान को किस सीमा तक सरकारी कल्याणकारी योजनाओं, आर्थिक एवं सामाजिक सुरक्षा, शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, आवास, खाद्य सुरक्षा तथा महिला–केंद्रित नीतियों से जोड़ा जा सकता है। साथ ही, यह अध्ययन इस प्रश्न पर भी ध्यान केंद्रित करेगा कि क्या महिला मतदाताओं का चुनावी व्यवहार केवल प्रत्यक्ष सरकारी लाभों और कल्याणकारी योजनाओं की प्रतिक्रिया है या इसके पीछे राजनीतिक जागरूकता, सामाजिक परिवर्तन, शिक्षा का विस्तार, संचार माध्यमों की बढ़ती पहुँच, परिवार और समुदाय में महिलाओं की बदलती भूमिका तथा स्वतंत्र राजनीतिक निर्णय लेने की क्षमता जैसे व्यापक कारक भी कार्य कर रहे हैं। विशेष रूप से अध्ययन ग्रामीण और शहरी महिला मतदाताओं के बीच राजनीतिक व्यवहार में मौजूद अंतर, विभिन्न सामाजिक एवं आर्थिक समूहों की महिलाओं की चुनावी प्राथमिकताओं तथा सरकारी योजनाओं के प्रति उनकी धारणा का भी विश्लेषण करेगा। इसके साथ ही, महिला मतदाताओं के मुद्दा–आधारित मतदान, राजनीतिक दलों के प्रति उनकी पसंद तथा चुनावी निर्णयों में परिवार और स्थानीय सामाजिक संरचना की भूमिका को समझने का प्रयास किया जाएगा। अध्ययन का केंद्रीय तर्क यह है कि बिहार में महिलाओं की बढ़ती मतदान भागीदारी को केवल कल्याणकारी राजनीति के परिणाम के रूप में देखना पर्याप्त नहीं होगा, बल्कि इसे राजनीतिक जागरूकता, सामाजिक परिवर्तन, नागरिक भागीदारी और बढ़ती राजनीतिक एजेंसी की व्यापक प्रक्रिया के रूप में समझना आवश्यक है। इस प्रकार अध्ययन बिहार में महिला मतदाताओं के बदलते राजनीतिक व्यवहार, उनकी चुनावी प्राथमिकताओं और राज्य की चुनावी राजनीति पर उनके बढ़ते प्रभाव को समझने का प्रयास करेगा।

मुलशब्द: कल्याणकारी राजनीति, महिला मतदाता, राजनीतिक भागीदारी, चुनावी व्यवहार, महिला सशक्तीकरण, मतदान प्रवृत्ति

प्रस्तावना
भारतीय लोकतंत्र में महिलाओं की राजनीतिक भूमिका पिछले कुछ दशकों में निरंतर विस्तृत और प्रभावशाली हुई है। प्रारंभिक दौर में महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी मुख्यतः सीमित मतदान, सामाजिक आंदोलनों और राजनीतिक दलों से जुड़ी गतिविधियों तक केंद्रित थी, लेकिन समय के साथ महिलाओं की चुनावी भागीदारी में उल्लेखनीय परिवर्तन आया है। बिहार इस परिवर्तन का एक महत्वपूर्ण उदाहरण है, जहाँ महिला मतदाताओं की मतदान भागीदारी ने राज्य की चुनावी राजनीति की दिशा और राजनीतिक दलों की रणनीतियों को प्रभावित किया है। [1] महिलाओं की बढ़ती राजनीतिक सक्रियता के पीछे शिक्षा के विस्तार, सामाजिक जागरूकता, संचार माध्यमों की बढ़ती पहुँच, पंचायतों एवं स्थानीय निकायों में महिलाओं के लिए आरक्षण, आर्थिक एवं सामाजिक परिवर्तन तथा विभिन्न सरकारी कल्याणकारी योजनाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। विशेष रूप से महिलाओं को लक्षित आवास, स्वास्थ्य, शिक्षा, खाद्य सुरक्षा, रोजगार, सामाजिक सुरक्षा और आर्थिक सहायता से संबंधित योजनाओं ने राज्य और महिला मतदाताओं के बीच प्रत्यक्ष संबंध को मजबूत किया है। [2] इसके परिणामस्वरूप राजनीतिक दलों ने भी महिला मतदाताओं को एक महत्वपूर्ण चुनावी समूह के रूप में पहचानना शुरू किया है और अपने चुनावी घोषणापत्रों तथा नीतियों में महिलाओं से संबंधित मुद्दों को अधिक प्रमुखता देना शुरू किया है। इस संदर्भ में अध्ययन का उद्देश्य यह समझना है कि बिहार में महिला मतदाताओं की बढ़ती भागीदारी के पीछे केवल कल्याणकारी योजनाओं का प्रभाव है या इसके पीछे शिक्षा, राजनीतिक जागरूकता, सामाजिक गतिशीलता, परिवार में महिलाओं की बदलती भूमिका, आर्थिक आत्मनिर्भरता और स्वतंत्र राजनीतिक निर्णय लेने की क्षमता जैसे व्यापक कारक भी कार्य कर रहे हैं। [3] साथ ही यह भी विश्लेषण किया जाएगा कि महिला मतदाता चुनावों में केवल लाभार्थी के रूप में व्यवहार करती हैं या वे विकास, रोजगार, शिक्षा, स्वास्थ्य, सुरक्षा, महँगाई, सामाजिक सम्मान और शासन की गुणवत्ता जैसे व्यापक राजनीतिक मुद्दों को भी अपने चुनावी निर्णयों का आधार बनाती हैं। इस प्रकार बिहार में महिला मतदाताओं की बढ़ती भूमिका को केवल मतदान प्रतिशत में वृद्धि के रूप में देखना पर्याप्त नहीं होगा, बल्कि इसे राजनीतिक जागरूकता, नागरिक भागीदारी, स्वतंत्र राजनीतिक पसंद और बढ़ती राजनीतिक एजेंसी के व्यापक सामाजिक–राजनीतिक परिवर्तन के रूप में समझना आवश्यक है। [4]

साहित्य समीक्षा
महिला राजनीतिक भागीदारी और चुनावी व्यवहार के अध्ययन पर देश–विदेश में व्यापक साहित्य उपलब्ध है, जिसमें महिलाओं की मतदान प्रवृत्ति, राजनीतिक जागरूकता, प्रतिनिधित्व, राजनीतिक सशक्तीकरण, कल्याणकारी नीतियों तथा राजनीतिक निर्णय लेने की क्षमता जैसे विभिन्न पक्षों पर विचार किया गया है। इस अध्ययन में उपलब्ध साहित्य का व्यवस्थित और आलोचनात्मक विश्लेषण किया जाएगा, ताकि बिहार में महिला मतदाताओं की बढ़ती भूमिका को व्यापक सैद्धांतिक और अनुभवजन्य संदर्भ में समझा जा सके। महिला राजनीतिक भागीदारी से संबंधित अध्ययनों में सामान्यतः शिक्षा, सामाजिक स्थिति, आर्थिक स्वतंत्रता, परिवार, जाति, वर्ग और राजनीतिक संस्थाओं की भूमिका पर बल दिया गया है, जबकि चुनावी व्यवहार से संबंधित अध्ययनों में उम्मीदवार, राजनीतिक दल, स्थानीय मुद्दे, नेतृत्व,

विकास और सरकारी नीतियों को महत्वपूर्ण निर्धारक माना गया है। कल्याणकारी राजनीति से संबंधित साहित्य यह समझने में सहायता करता है कि सरकारी योजनाएँ किस प्रकार राज्य और नागरिकों के बीच राजनीतिक संबंध को प्रभावित करती हैं तथा लाभ प्राप्त करने वाले समूहों की राजनीतिक प्राथमिकताओं में किस प्रकार परिवर्तन ला सकती हैं। [5] बिहार के संदर्भ में उपलब्ध अध्ययनों के माध्यम से महिला मतदान, जातीय एवं सामाजिक संरचना, ग्रामीण राजनीति, पंचायतों में महिला आरक्षण तथा राज्य की चुनावी राजनीति में महिलाओं की बदलती भूमिका को समझने का प्रयास किया जाएगा। इसके साथ ही महिला राजनीतिक एजेंसी से संबंधित अध्ययनों का भी विश्लेषण किया जाएगा, ताकि यह स्पष्ट किया जा सके कि मतदान में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी उनके स्वतंत्र राजनीतिक निर्णय लेने की क्षमता में वास्तविक वृद्धि को दर्शाती है या नहीं। साहित्य समीक्षा के माध्यम से पूर्ववर्ती अध्ययनों की प्रमुख अवधारणाओं, निष्कर्षों, शोध–पद्धतियों और सीमाओं की पहचान की जाएगी। विशेष रूप से यह देखा जाएगा कि उपलब्ध अध्ययनों में कल्याणकारी योजनाओं, महिला मतदाताओं के चुनावी व्यवहार और उनकी राजनीतिक स्वायत्तता के बीच संबंध को किस सीमा तक समझाया गया है। इसी आधार पर वर्तमान अध्ययन के शोध–अंतर को निर्धारित किया जाएगा और यह स्थापित किया जाएगा कि बिहार में महिला मतदाताओं की बढ़ती राजनीतिक भूमिका को कल्याणकारी राजनीति और राजनीतिक एजेंसी के संयुक्त दृष्टिकोण से समझने की आवश्यकता है। [6]

सैद्धांतिक आधार

प्रस्तुत अध्ययन का सैद्धांतिक आधार राजनीतिक भागीदारी, राजनीतिक एजेंसी और कल्याणकारी राजनीति की प्रमुख अवधारणाओं पर विकसित किया जाएगा। राजनीतिक भागीदारी की अवधारणा के माध्यम से महिलाओं के मतदान, राजनीतिक जागरूकता, चुनावी रुचि, राजनीतिक दलों एवं उम्मीदवारों के प्रति उनकी प्राथमिकताओं तथा राजनीतिक प्रक्रियाओं में उनकी सक्रिय भूमिका को समझने का प्रयास किया जाएगा। राजनीतिक एजेंसी की अवधारणा इस अध्ययन के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण होगी, क्योंकि केवल मतदान करना और स्वतंत्र राजनीतिक निर्णय लेना दोनों अलग–अलग प्रक्रियाएँ हो सकती हैं। [7] इस संदर्भ में यह परीक्षण किया जाएगा कि महिला मतदाता अपने चुनावी निर्णय स्वयं लेती हैं या उनके निर्णय परिवार, पति, जाति, समुदाय, स्थानीय नेतृत्व और सामाजिक संबंधों से प्रभावित होते हैं। दूसरी ओर, कल्याणकारी राजनीति की अवधारणा के माध्यम से सरकारी योजनाओं और राजनीतिक व्यवहार के बीच संबंध का अध्ययन किया जाएगा। यह समझने का प्रयास किया जाएगा कि सरकार द्वारा महिलाओं को प्रदान किए जाने वाले प्रत्यक्ष लाभ, सामाजिक सुरक्षा, आर्थिक सहायता, आवास, स्वास्थ्य, शिक्षा, खाद्य सुरक्षा और रोजगार से संबंधित योजनाएँ महिलाओं की राजनीतिक प्राथमिकताओं और मतदान व्यवहार को किस प्रकार प्रभावित करती हैं। [8] अध्ययन का केंद्रीय सैद्धांतिक प्रश्न यह होगा कि क्या कल्याणकारी योजनाएँ महिलाओं को केवल सरकारी योजनाओं की लाभार्थी बनाती हैं अथवा इन योजनाओं के माध्यम से महिलाओं में सरकार की नीतियों के प्रति जागरूकता, राजनीतिक विश्वास और स्वतंत्र निर्णय लेने की क्षमता भी विकसित होती है। इस दृष्टिकोण से महिला मतदाता को केवल एक लाभ प्राप्त करने वाले सामाजिक समूह के रूप में नहीं, बल्कि सक्रिय राजनीतिक नागरिक और निर्णय लेने वाली राजनीतिक इकाई के रूप में देखा जाएगा। इन तीनों अवधारणाओं को एक साथ रखकर अध्ययन यह समझने का प्रयास करेगा कि कल्याणकारी राजनीति किस प्रकार महिला राजनीतिक भागीदारी को प्रभावित करती है और क्या बढ़ती राजनीतिक भागीदारी अंततः महिलाओं की राजनीतिक एजेंसी और स्वतंत्र राजनीतिक निर्णय क्षमता को मजबूत करती है। [9]

शोध प्रश्न

प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य शोध प्रश्न यह है कि बिहार में महिला मतदाताओं की राजनीतिक भागीदारी और मतदान प्रवृत्ति में वृद्धि के पीछे कौन–कौन से सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और कल्याणकारी कारक कार्य कर रहे हैं। अध्ययन विशेष रूप से यह जानने का प्रयास करेगा कि विभिन्न सरकारी कल्याणकारी योजनाएँ महिला मतदाताओं के चुनावी व्यवहार, राजनीतिक प्राथमिकताओं और मतदान के निर्णय को किस सीमा तक प्रभावित करती हैं। [10] इसके अंतर्गत यह भी अध्ययन किया जाएगा कि क्या सरकारी योजनाओं से प्राप्त प्रत्यक्ष लाभ महिलाओं के राजनीतिक निर्णयों को प्रभावित करने वाला प्रमुख कारक है अथवा महिलाएँ विकास, रोजगार, शिक्षा, स्वास्थ्य, सुरक्षा, महँगाई, सामाजिक सम्मान और शासन की गुणवत्ता जैसे व्यापक मुद्दों को भी अपने चुनावी निर्णय का आधार बनाती हैं। 10 एक अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न यह होगा कि महिला मतदाता अपने राजनीतिक निर्णय कितनी स्वतंत्रता से लेती हैं तथा परिवार, पति, जाति, समुदाय, स्थानीय सामाजिक संरचना और राजनीतिक नेतृत्व का उनके निर्णयों पर कितना प्रभाव रहता है। [11] अध्ययन में यह भी देखा जाएगा कि ग्रामीण और शहरी महिला मतदाताओं तथा विभिन्न सामाजिक और आर्थिक समूहों की महिलाओं के राजनीतिक व्यवहार में किस प्रकार के अंतर पाए जाते हैं। इसके अतिरिक्त यह प्रश्न भी महत्वपूर्ण होगा कि महिलाओं की बढ़ती मतदान भागीदारी केवल उनकी संख्या में वृद्धि का संकेत है या इसके साथ उनकी राजनीतिक जागरूकता, स्वतंत्र राजनीतिक पसंद और राजनीतिक एजेंसी में भी वास्तविक परिवर्तन आया है। अंततः अध्ययन यह समझने का प्रयास करेगा कि बिहार में कल्याणकारी राजनीति महिला मतदाताओं को केवल लाभार्थी के रूप में प्रभावित कर रही है या उन्हें अधिक जागरूक, स्वतंत्र और सक्रिय राजनीतिक नागरिक के रूप में भी विकसित कर रही है। [12]

शोध उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य बिहार में महिला मतदाताओं की बढ़ती राजनीतिक भूमिका, उनकी चुनावी भागीदारी, राजनीतिक जागरूकता तथा बदलते चुनावी व्यवहार का व्यापक, विश्लेषणात्मक और अनुभवजन्य अध्ययन करना है। बिहार की चुनावी राजनीति में महिलाओं की भूमिका पिछले कुछ वर्षों में महत्वपूर्ण रूप से बढ़ी है और महिला मतदाता अब केवल चुनावी प्रक्रिया में भाग लेने वाली सामान्य मतदाता नहीं रह गई हैं, बल्कि राजनीतिक दलों और उम्मीदवारों की चुनावी रणनीतियों को प्रभावित करने वाले एक महत्वपूर्ण राजनीतिक समूह के रूप में उभर रही हैं। इस अध्ययन का पहला उद्देश्य बिहार में महिला मतदान की दीर्घकालिक प्रवृत्ति का अध्ययन करना तथा विभिन्न विधानसभा चुनावों में महिला और पुरुष मतदान प्रतिशत की तुलनात्मक समीक्षा करना है, ताकि यह स्पष्ट किया जा सके कि महिलाओं की चुनावी भागीदारी में किस प्रकार परिवर्तन आया है। [13] दूसरा महत्वपूर्ण उद्देश्य बिहार सरकार तथा केंद्र सरकार की महिलाओं से संबंधित विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं और कार्यक्रमों की भूमिका का विश्लेषण करना है तथा यह जानना है कि इन योजनाओं का महिलाओं की राजनीतिक जागरूकता, राजनीतिक प्राथमिकताओं और मतदान निर्णयों पर किस प्रकार का प्रभाव पड़ता है। अध्ययन का एक अन्य उद्देश्य यह समझना है कि सरकारी योजनाओं से लाभ प्राप्त करने वाली महिलाएँ राज्य सरकार, राजनीतिक दलों और शासन–व्यवस्था के प्रति किस प्रकार की राजनीतिक धारणा विकसित करती हैं। इसके अतिरिक्त अध्ययन में शिक्षा, आर्थिक स्थिति, रोजगार, आर्थिक

स्वायत्तता, स्वयं सहायता समूहों से जुड़ाव, सामाजिक संगठन, संचार माध्यमों की पहुँच तथा राजनीतिक जानकारी जैसे कारकों का महिला राजनीतिक भागीदारी पर प्रभाव भी देखा जाएगा। [14] अध्ययन में जाति, वर्ग, सामाजिक स्थिति, आयु, शिक्षा तथा ग्रामीण–शहरी पृष्ठभूमि के आधार पर महिला मतदाताओं के चुनावी व्यवहार में मौजूद अंतर का विश्लेषण किया जाएगा। विशेष रूप से यह समझने का प्रयास किया जाएगा कि अनुसूचित जाति, अति पिछड़ा वर्ग, पिछड़ा वर्ग तथा सामान्य वर्ग की महिलाओं की राजनीतिक प्राथमिकताओं और मतदान व्यवहार में क्या अंतर दिखाई देता है। इसके साथ ही यह भी अध्ययन किया जाएगा कि महिलाएँ अपने राजनीतिक निर्णय कितनी स्वतंत्रता से लेती हैं और परिवार, पति, जाति, समुदाय, पंचायत, स्थानीय नेतृत्व तथा सामाजिक दबाव उनके चुनावी निर्णयों को किस सीमा तक प्रभावित करते हैं। इस अध्ययन का व्यापक उद्देश्य महिला मतदाताओं की बढ़ती संख्या को केवल मतदान प्रतिशत के रूप में न देखकर उनकी राजनीतिक एजेंसी, स्वतंत्र निर्णय क्षमता, राजनीतिक जागरूकता, नागरिक भागीदारी और चुनावी प्रभाव के व्यापक संदर्भ में समझना है। इस प्रकार अध्ययन बिहार में महिलाओं को लोकतांत्रिक प्रक्रिया के सक्रिय और प्रभावशाली राजनीतिक सहभागी के रूप में स्थापित करने वाली सामाजिक एवं राजनीतिक प्रक्रियाओं का समग्र विश्लेषण प्रस्तुत करेगा। [15]

परिकल्पना

प्रस्तुत अध्ययन की प्रमुख परिकल्पना यह होगी कि कल्याणकारी योजनाओं से प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से लाभ प्राप्त करने वाली महिलाओं में राजनीतिक जागरूकता, सरकारी नीतियों के प्रति जानकारी तथा राजनीतिक भागीदारी का स्तर अपेक्षाकृत अधिक हो सकता है। यह माना जा सकता है कि जब महिलाओं को आवास, स्वास्थ्य, शिक्षा, खाद्य सुरक्षा, रोजगार, सामाजिक सुरक्षा, आर्थिक सहायता तथा स्वयं सहायता समूहों जैसी योजनाओं का लाभ मिलता है, तो राज्य और महिलाओं के बीच प्रत्यक्ष संपर्क मजबूत होता है और इससे महिलाओं में शासन–व्यवस्था तथा राजनीतिक संस्थाओं के प्रति जागरूकता विकसित हो सकती है। [16] हालांकि, अध्ययन यह भी मानता है कि किसी सरकारी योजना का लाभ प्राप्त करना स्वतः स्वतंत्र राजनीतिक निर्णय की गारंटी नहीं देता। महिला की शिक्षा, आर्थिक स्वायत्तता, सामाजिक स्थिति, राजनीतिक जानकारी, सार्वजनिक जीवन में भागीदारी और सामाजिक संगठनों से जुड़ाव उसकी राजनीतिक एजेंसी को प्रभावित करने वाले महत्वपूर्ण कारक हो सकते हैं। अध्ययन की दूसरी परिकल्पना यह होगी कि शिक्षित, आर्थिक रूप से अपेक्षाकृत स्वायत्त तथा स्वयं सहायता समूहों या अन्य सामाजिक संगठनों से जुड़ी महिलाओं में स्वतंत्र राजनीतिक निर्णय लेने की संभावना अधिक हो सकती है। [17] इसके विपरीत परिवार, पति, जाति, समुदाय, स्थानीय सामाजिक संरचना और परंपरागत राजनीतिक नेतृत्व महिला मतदाताओं के चुनावी निर्णय को प्रभावित कर सकते हैं। तीसरी परिकल्पना यह होगी कि ग्रामीण और शहरी महिला मतदाताओं तथा विभिन्न सामाजिक और आर्थिक समूहों की महिलाओं के राजनीतिक व्यवहार में उल्लेखनीय अंतर हो सकता है। यह भी परिकल्पित किया जाएगा कि महिला मतदाताओं की बढ़ती मतदान भागीदारी केवल कल्याणकारी योजनाओं की प्रतिक्रिया नहीं है, बल्कि इसके पीछे शिक्षा, राजनीतिक जागरूकता, सामाजिक परिवर्तन, संचार माध्यमों की पहुँच और महिलाओं की बदलती सामाजिक भूमिका भी महत्वपूर्ण कारक हैं। अध्ययन इस बात की भी जाँच करेगा कि क्या कल्याणकारी योजनाएँ महिलाओं को केवल लाभार्थी बनाती हैं अथवा उन्हें सरकार से प्रश्न करने, नीतियों का मूल्यांकन करने और स्वतंत्र राजनीतिक विकल्प चुनने में भी सक्षम बनाती हैं। इस प्रकार अध्ययन की मूल परिकल्पना यह है कि कल्याणकारी राजनीति और महिला राजनीतिक एजेंसी के बीच सकारात्मक संबंध हो सकता है, लेकिन इस संबंध की वास्तविक प्रकृति शिक्षा, आर्थिक स्वायत्तता, जाति, वर्ग, परिवार और सामाजिक संरचना जैसे मध्यवर्ती कारकों पर निर्भर करती है। [18]

शोध पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन में मिश्रित शोध पद्धति अपनाई जाएगी, जिसमें मात्रात्मक और गुणात्मक दोनों प्रकार की शोध विधियों का समन्वित उपयोग किया जाएगा, ताकि बिहार में महिला मतदाताओं की राजनीतिक भूमिका को केवल आँकड़ों के आधार पर नहीं बल्कि उनके सामाजिक और राजनीतिक अनुभवों के आधार पर भी समझा जा सके। मात्रात्मक अध्ययन के अंतर्गत भारत निर्वाचन आयोग द्वारा प्रकाशित विधानसभा चुनावों से संबंधित आँकड़ों, महिला एवं पुरुष मतदाताओं की मतदान भागीदारी, निर्वाचन क्षेत्रवार मतदान प्रतिशत, मतदाता सूची संबंधी आँकड़ों तथा उपलब्ध चुनावी रिपोर्टों का उपयोग किया जाएगा। [19] इसके अतिरिक्त बिहार सरकार और भारत सरकार की विभिन्न महिला–केंद्रित कल्याणकारी योजनाओं से संबंधित सरकारी रिपोर्ट, बजट दस्तावेज, विभागीय रिपोर्ट, योजना मूल्यांकन रिपोर्ट और सांख्यिकीय सामग्री का भी अध्ययन किया जाएगा। इन आँकड़ों के माध्यम से महिला मतदान की दीर्घकालिक प्रवृत्ति, महिला और पुरुष मतदान के बीच अंतर तथा विभिन्न चुनावों में महिलाओं की भागीदारी में हुए परिवर्तन का तुलनात्मक विश्लेषण किया जाएगा। गुणात्मक अध्ययन के अंतर्गत चयनित जिलों और विधानसभा क्षेत्रों में महिला मतदाताओं के साक्षात्कार, प्रश्नावली आधारित सर्वेक्षण तथा आवश्यकता के अनुसार केंद्रित समूह चर्चा की जा सकती है। नमूना चयन में ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों, विभिन्न सामाजिक वर्गों तथा अलग–अलग आयु एवं आर्थिक समूहों की महिलाओं को पर्याप्त प्रतिनिधित्व देने का प्रयास किया जाएगा। [20] सर्वेक्षण में महिलाओं की सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि, शिक्षा, आय, रोजगार, सरकारी योजनाओं से प्राप्त लाभ, राजनीतिक जानकारी, मतदान की प्राथमिकता, राजनीतिक दलों के प्रति धारणा और स्वतंत्र राजनीतिक निर्णय लेने की क्षमता से संबंधित प्रश्न शामिल किए जाएंगे। इसके अतिरिक्त राजनीतिक दलों के घोषणापत्र, चुनावी भाषण, प्रचार सामग्री, महिला–केंद्रित चुनावी वादों, समाचार माध्यमों तथा सार्वजनिक राजनीतिक विमर्श का विषयगत अध्ययन भी किया जा सकता है। मात्रात्मक आँकड़ों का तुलनात्मक एवं आवश्यकतानुसार सांख्यिकीय विश्लेषण तथा साक्षात्कारों से प्राप्त सूचनाओं का विषयगत विश्लेषण किया जाएगा। दोनों प्रकार के निष्कर्षों को एकीकृत करके अध्ययन यह समझने का प्रयास करेगा कि महिला मतदान में वृद्धि के पीछे वास्तविक सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और कल्याणकारी कारण क्या हैं। इस प्रकार मिश्रित शोध पद्धति अध्ययन को अधिक विश्वसनीय और व्यापक बनाएगी तथा महिला मतदान की मात्रा और महिला राजनीतिक एजेंसी की गुणवत्ता दोनों को एक साथ समझने का अवसर प्रदान करेगी। [21]

महिला मतदान की प्रवृत्ति

बिहार में महिला मतदान की बढ़ती प्रवृत्ति राज्य की समकालीन चुनावी राजनीति में सबसे महत्वपूर्ण परिवर्तनों में से एक के रूप में अध्ययन का विषय बनेगी। इस भाग में वर्ष 2010 से 2025 तक बिहार विधानसभा चुनावों में महिला और पुरुष मतदाताओं के मतदान प्रतिशत की तुलनात्मक समीक्षा की जाएगी तथा विभिन्न चुनावों के दौरान महिला मतदान में आए परिवर्तन को क्रमबद्ध रूप से प्रस्तुत किया जाएगा। अध्ययन यह जानने का प्रयास करेगा कि किन चुनावों में महिलाओं की मतदान भागीदारी में विशेष वृद्धि हुई और उस समय कौन–सी राजनीतिक, सामाजिक

या आर्थिक परिस्थितियाँ सक्रिय थीं। महिला मतदान में वृद्धि को केवल चुनावी आँकड़ों की दृष्टि से नहीं बल्कि व्यापक सामाजिक परिवर्तन के संदर्भ में समझा जाएगा। [22] इसके अंतर्गत महिला शिक्षा में वृद्धि, राजनीतिक जागरूकता, मतदाता पंजीकरण, मतदान केंद्रों की पहुँच, चुनावी सुरक्षा, स्थानीय निकायों में महिलाओं की भागीदारी, स्वयं सहायता समूहों का विस्तार तथा सरकारी कल्याणकारी योजनाओं की भूमिका का अध्ययन किया जाएगा। यह भी देखा जाएगा कि महिला मतदान की बढ़ती प्रवृत्ति ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में समान है या उसमें क्षेत्रीय अंतर मौजूद हैं। [23] इसके साथ ही विभिन्न सामाजिक समूहों की महिलाओं के मतदान व्यवहार में भी अंतर का अध्ययन किया जाएगा। महिला मतदान में वृद्धि का एक महत्वपूर्ण राजनीतिक परिणाम यह है कि राजनीतिक दलों को महिलाओं को एक अलग और महत्वपूर्ण चुनावी समूह के रूप में संबोधित करने की आवश्यकता महसूस हुई है। इसलिए अध्ययन में यह भी देखा जाएगा कि महिला मतदान में वृद्धि के कारण राजनीतिक दलों की चुनावी रणनीतियों, घोषणापत्रों और महिला–केंद्रित नीतियों में किस प्रकार परिवर्तन आया है। महिला मतदाताओं की बढ़ती भागीदारी को बिहार की राजनीति में सत्ता, नीति और चुनावी प्रतिस्पर्धा के नए समीकरणों के संदर्भ में भी देखा जाएगा। इस प्रकार महिला मतदान की प्रवृत्ति का अध्ययन यह स्पष्ट करने में सहायता करेगा कि बिहार में महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी केवल लोकतांत्रिक अधिकार के प्रयोग तक सीमित नहीं है, बल्कि वह चुनावी परिणामों, राजनीतिक विमर्श और राजनीतिक दलों की रणनीति को प्रभावित करने वाली उभरती राजनीतिक शक्ति में परिवर्तित हो रही है। [24]

कल्याणकारी योजनाएँ और महिला मतदाता

बिहार में महिलाओं के सामाजिक और आर्थिक जीवन को प्रभावित करने वाली विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं ने राज्य और महिला नागरिकों के बीच संबंध को एक नई दिशा प्रदान की है। इस भाग में जीविका, महिला स्वयं सहायता समूह, शिक्षा, स्वास्थ्य, आवास, सामाजिक सुरक्षा, आर्थिक सहायता, रोजगार तथा अन्य महिला–केंद्रित योजनाओं का विस्तृत अध्ययन किया जाएगा। विशेष रूप से यह विश्लेषण किया जाएगा कि इन योजनाओं ने महिलाओं की आर्थिक स्थिति, परिवार में निर्णय लेने की क्षमता, सामाजिक प्रतिष्ठा, आत्मविश्वास और सार्वजनिक जीवन में भागीदारी को किस सीमा तक प्रभावित किया है। अध्ययन का एक प्रमुख प्रश्न यह होगा कि सरकारी योजनाओं से प्राप्त प्रत्यक्ष लाभ महिला मतदाताओं के राजनीतिक निर्णयों और चुनावी प्राथमिकताओं को प्रभावित करते हैं या नहीं। [25] यह भी देखा जाएगा कि महिलाएँ कल्याणकारी योजनाओं को सरकार की उपलब्धि, नागरिक अधिकार, सामाजिक सुरक्षा अथवा चुनावी लाभ के रूप में किस प्रकार देखती हैं। स्वयं सहायता समूहों की भूमिका विशेष रूप से महत्वपूर्ण होगी, क्योंकि इनके माध्यम से महिलाओं को केवल आर्थिक गतिविधियों से नहीं बल्कि सामूहिक संगठन, बचत, ऋण, प्रशिक्षण, सामाजिक संवाद और सार्वजनिक निर्णयों से भी जोड़ा जा सकता है। अध्ययन यह समझने का प्रयास करेगा कि स्वयं सहायता समूहों से जुड़ने के बाद महिलाओं की राजनीतिक जानकारी और सार्वजनिक जीवन में भागीदारी में कोई परिवर्तन आता है या नहीं। 26 इसके साथ ही योजनाओं की जानकारी महिलाओं तक किस माध्यम से पहुँचती है सरकारी तंत्र, पंचायत, स्वयं सहायता समूह, स्थानीय प्रतिनिधि, राजनीतिक कार्यकर्ता या संचार माध्यम इसका भी अध्ययन किया जाएगा। यह भी आवश्यक होगा कि कल्याणकारी योजनाओं का प्रभाव सभी महिलाओं पर समान रूप से नहीं माना जाए, क्योंकि जाति, वर्ग, शिक्षा, आय, क्षेत्र और सामाजिक स्थिति के आधार पर योजनाओं तक पहुँच और उनसे प्राप्त लाभ में अंतर हो सकता है। इसलिए अध्ययन कल्याणकारी राजनीति को केवल सरकारी लाभ के वितरण के रूप में नहीं, बल्कि राज्य और महिला नागरिकों के बीच विकसित होने वाले सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक संबंध के रूप में देखेगा। इससे यह समझने में सहायता मिलेगी कि क्या कल्याणकारी योजनाएँ महिला मतदाताओं को राजनीतिक रूप से अधिक जागरूक और सक्रिय बना रही हैं या उनका प्रभाव मुख्यतः चुनावी पसंद तक सीमित है। [27]

महिला चुनावी व्यवहार

महिला मतदाताओं के चुनावी व्यवहार का अध्ययन इस शोध का एक अत्यंत महत्वपूर्ण पक्ष होगा, क्योंकि मतदान प्रतिशत में वृद्धि के साथ यह जानना आवश्यक है कि महिलाएँ मतदान का निर्णय किस आधार पर लेती हैं और उनके राजनीतिक विकल्पों को कौन–कौन से कारक प्रभावित करते हैं। इस भाग में सबसे पहले यह विश्लेषण किया जाएगा कि महिला मतदाता अपने चुनावी निर्णय स्वयं लेती हैं या परिवार, पति, माता–पिता, जाति, समुदाय और स्थानीय सामाजिक नेतृत्व का उन पर प्रभाव बना हुआ है। इसके साथ उम्मीदवार की व्यक्तिगत छवि, राजनीतिक दल, नेतृत्व, चुनावी घोषणापत्र, सरकारी योजनाएँ, स्थानीय विकास, रोजगार, शिक्षा, स्वास्थ्य, महिला सुरक्षा, महँगाई और सामाजिक कल्याण जैसे मुद्दों की भूमिका का अध्ययन किया जाएगा। [28] यह समझना महत्वपूर्ण होगा कि महिला मतदाता किसी राजनीतिक दल को केवल सरकारी योजना के लाभ के कारण समर्थन करती हैं या उम्मीदवार की विश्वसनीयता, स्थानीय विकास और व्यापक राजनीतिक मुद्दे भी उसके निर्णय को प्रभावित करते हैं। अध्ययन यह भी देखेगा कि महिला मतदाताओं की राजनीतिक पसंद स्थायी होती है या वे चुनाव–दर–चुनाव अपने अनुभवों और परिस्थितियों के आधार पर राजनीतिक विकल्प बदलती हैं। [29] ग्रामीण क्षेत्रों में जाति, पंचायत, परिवार और समुदाय की भूमिका तथा शहरी क्षेत्रों में शिक्षा, रोजगार, व्यक्तिगत अनुभव और संचार माध्यमों की भूमिका का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है। महिलाओं की आयु, शिक्षा, आर्थिक स्थिति, वैवाहिक स्थिति, रोजगार, सामाजिक वर्ग तथा सरकारी योजनाओं से जुड़ाव जैसे कारकों को भी चुनावी व्यवहार के विश्लेषण में शामिल किया जाएगा। विशेष रूप से यह पता लगाने का प्रयास किया जाएगा कि महिला मतदाता राजनीतिक दलों की नीतियों और सरकारी योजनाओं का मूल्यांकन करती हैं या केवल पारंपरिक सामाजिक पहचान के आधार पर मतदान करती हैं। इस प्रकार महिला चुनावी व्यवहार का अध्ययन यह निर्धारित करने में सहायता करेगा कि बिहार की महिला मतदाता परंपरागत सामाजिक प्रभावों के भीतर राजनीतिक निर्णय ले रही हैं या धीरे–धीरे स्वतंत्र, जागरूक और मुद्दा–आधारित राजनीतिक विकल्प विकसित कर रही हैं। [30]

जाति, वर्ग और ग्रामीण–शहरी अंतर

बिहार की सामाजिक संरचना जाति, वर्ग, क्षेत्र और आर्थिक असमानताओं से प्रभावित रही है, इसलिए महिला मतदाताओं को एक समान राजनीतिक समूह के रूप में देखना उनके वास्तविक राजनीतिक व्यवहार को समझने में पर्याप्त नहीं होगा। इस भाग में अनुसूचित जाति, अति पिछड़ा वर्ग, पिछड़ा वर्ग और सामान्य वर्ग की महिलाओं के राजनीतिक व्यवहार, मतदान प्राथमिकताओं, राजनीतिक जागरूकता और कल्याणकारी योजनाओं के प्रति दृष्टिकोण की तुलना की जाएगी। [31] साथ ही आर्थिक स्थिति, शिक्षा, रोजगार और परिवार की आय जैसे वर्गीय कारकों का महिला राजनीतिक भागीदारी पर प्रभाव भी देखा जाएगा। अध्ययन का महत्वपूर्ण प्रश्न यह होगा कि क्या सामाजिक और आर्थिक रूप से कमजोर महिलाओं के लिए सरकारी कल्याणकारी

योजनाएँ राजनीतिक जागरूकता और मतदान निर्णय का अधिक महत्वपूर्ण आधार बनती हैं। [32] इसके साथ ही ग्रामीण और शहरी महिला मतदाताओं के बीच मौजूद अंतर का विश्लेषण किया जाएगा। ग्रामीण महिलाओं के राजनीतिक व्यवहार में परिवार, जाति, समुदाय, पंचायत, स्थानीय नेतृत्व और सामाजिक नेटवर्क का प्रभाव अपेक्षाकृत अधिक हो सकता है, जबकि शहरी महिलाओं के राजनीतिक व्यवहार में शिक्षा, रोजगार, संचार माध्यम, व्यक्तिगत अनुभव और नागरिक मुद्दों की भूमिका अधिक महत्वपूर्ण हो सकती है। हालांकि इन संभावनाओं को पूर्वनिर्धारित निष्कर्ष के रूप में नहीं लिया जाएगा, बल्कि उपलब्ध आँकड़ों और क्षेत्रीय अध्ययन के आधार पर उनका परीक्षण किया जाएगा। [33] यह भी देखा जाएगा कि विभिन्न सामाजिक समूहों की महिलाओं में राजनीतिक निर्णय लेने की स्वतंत्रता का स्तर किस प्रकार अलग–अलग है तथा सरकारी योजनाओं का लाभ उनकी राजनीतिक प्राथमिकताओं को किस सीमा तक प्रभावित करता है। अध्ययन यह भी विश्लेषण कर सकता है कि क्या महिला मतदाताओं की सामाजिक पहचान उनके चुनावी निर्णय में अभी भी प्रमुख भूमिका निभाती है या कल्याणकारी योजनाएँ और विकास संबंधी मुद्दे पारंपरिक जातीय राजनीतिक प्रभावों को कुछ हद तक कमजोर कर रहे हैं। इस प्रकार जाति, वर्ग और ग्रामीण–शहरी अंतर का अध्ययन बिहार में महिला राजनीतिक व्यवहार की विविधता, असमानता, सामाजिक आधार और बदलती राजनीतिक प्राथमिकताओं को समझने में महत्वपूर्ण योगदान देगा। [34]

2025 बिहार विधानसभा चुनाव का विश्लेषण

वर्ष 2025 के बिहार विधानसभा चुनाव को इस अध्ययन में समकालीन अध्ययन–प्रकरण के रूप में शामिल किया जाएगा, जिसके माध्यम से महिला मतदाताओं की भूमिका, कल्याणकारी राजनीति और चुनावी व्यवहार के बीच संबंध को वर्तमान राजनीतिक संदर्भ में समझने का प्रयास किया जाएगा। [35] इस चुनाव के संदर्भ में महिला मतदान की प्रवृत्ति, महिला–केंद्रित सरकारी योजनाएँ, राजनीतिक दलों के चुनावी घोषणापत्र, महिला मतदाताओं को संबोधित राजनीतिक भाषण, प्रचार अभियान तथा चुनावी रणनीतियों का विश्लेषण किया जाएगा। विशेष रूप से यह देखा जाएगा कि प्रमुख राजनीतिक दलों ने महिलाओं से संबंधित किन मुद्दों को अपने चुनावी विमर्श में प्रमुखता दी और महिला मतदाताओं को आकर्षित करने के लिए किन प्रकार की योजनाओं, वादों और राजनीतिक संदेशों का उपयोग किया। शिक्षा, रोजगार, आर्थिक सहायता, स्वास्थ्य, महिला सुरक्षा, आवास, सामाजिक सुरक्षा, स्वयं सहायता समूह और आर्थिक आत्मनिर्भरता जैसे मुद्दों को किस प्रकार चुनावी राजनीति का हिस्सा बनाया गया, इसका अध्ययन किया जाएगा। [36] उपलब्ध निर्वाचन आँकड़ों के आधार पर महिला मतदान की भागीदारी का विश्लेषण किया जाएगा तथा आवश्यकता होने पर विभिन्न क्षेत्रों और सामाजिक समूहों के बीच तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है। यदि क्षेत्रीय सर्वेक्षण और साक्षात्कार उपलब्ध हों, तो महिला मतदाताओं से सीधे यह जानने का प्रयास किया जाएगा कि उनके मतदान निर्णय में सरकारी योजनाओं, उम्मीदवार, राजनीतिक दल, स्थानीय विकास, सामाजिक पहचान और अन्य मुद्दों की क्या भूमिका रही। 2025 के चुनाव का अध्ययन यह समझने का अवसर प्रदान करेगा कि क्या महिला मतदाता वास्तव में चुनावी परिणामों को प्रभावित करने वाली निर्णायक शक्ति बन चुकी हैं और क्या राजनीतिक दलों ने अपनी रणनीतियों में महिलाओं को केंद्र में रखना शुरू कर दिया है। इस प्रकार 2025 का चुनाव इस शोध को समकालीन राजनीतिक संदर्भ, अनुभवजन्य आधार और वर्तमान चुनावी राजनीति से प्रत्यक्ष संबंध प्रदान करेगा। 37

प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि बिहार की महिला मतदाता राज्य की चुनावी राजनीति में एक महत्वपूर्ण और प्रभावशाली राजनीतिक समूह के रूप में उभर रही हैं। महिला मतदान में वृद्धि के पीछे शिक्षा, राजनीतिक जागरूकता, आर्थिक परिवर्तन, कल्याणकारी योजनाओं, स्वयं सहायता समूहों तथा सामाजिक बदलाव की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। हालांकि, केवल मतदान प्रतिशत में वृद्धि को पूर्ण राजनीतिक सशक्तीकरण नहीं माना जा सकता, क्योंकि महिलाओं के चुनावी निर्णय पर परिवार, जाति, समुदाय और स्थानीय नेतृत्व का प्रभाव अभी भी मौजूद हो सकता है। इसलिए महिला राजनीतिक भागीदारी को कल्याणकारी राजनीति, सामाजिक परिवर्तन, आर्थिक स्वायत्तता और राजनीतिक जागरूकता के संयुक्त प्रभाव के रूप में समझना आवश्यक है। वास्तविक राजनीतिक सशक्तीकरण के लिए महिलाओं की स्वतंत्र निर्णय क्षमता, राजनीतिक नेतृत्व और नीति–निर्माण में भागीदारी को और मजबूत करना आवश्यक है।

संदर्भ सूची

1. देशपांडे, राजेश्वरी, शैपिंग ऑफ द वुमन कॉन्स्टिट्यूएन्सी इन इंडियन इलेक्शन्स: एविडेन्स फ्रॉम द एनईएस डाटा, इंडियन जर्नल ऑफ पॉलिटिकल रिसर्च, खंड 12, अंक 2, 2024, पृ. 22.
2. हेंकला, चार्ल्स, सायन बनर्जी, अंजलि थॉमस एवं अरिंदम बनर्जी, इलेक्टिंग विमेन इन एथनिकली डिवाइडेड सोसाइटीज: कैंडिडेट्स, कैम्पेन्स एंड इंटरसेक्शनैलिटी इन बिहार, इंडिया, कम्पेरेटिव पॉलिटिकल स्टडीज, खंड 56, अंक 9, 2023, पृ. 1467दृ 1469.
3. कपूर, मुदित एवं शामिका रवि, पॉवर्टी, पैंडेमिक एंड इलेक्शन्स: एनालिसिस ऑफ बिहार असेंबली इलेक्शन्स 2020, इंडियन जर्नल ऑफ ह्यूमन डेवलपमेंट, खंड 15, अंक 1, 2021, पृ. 25.
4. मलिक, शबाना परवीन, अपसर्ज ऑफ विमेन्स पॉलिटिकल पार्टिसिपेशन: ए स्टडी ऑफ वोटर्स टर्नआउट इन द जनरल इलेक्शन्स इन इंडिया, बिहार जर्नल ऑफ पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन, खंड 19, अंक 2, 2022, पृ. 14दृ15.
5. भाटी, प्रेर्णा एवं देबजानी सरकार घोष, स्पैटियो–टेम्पोरल एनालिसिस ऑफ द चेंजिंग इलेक्टोरल कल्चर ऑफ विमेन इन बिहार, जियोग्राफिया, खंड 27, अंक 58, 2025, पृ. 18.
6. वही, पृ. 15–16.
7. पांडेय, रवि कांत, अल्कोहल बैन एंड पॉपुलिस्ट पॉलिसीज: न्यू डाइमेंशन्स ऑफ विमेन्स पॉलिटिक्स इन बिहार, शोधसामाजिक: जर्नल ऑफ सोशल स्टडीज, खंड 3, अंक 1, 2026, पृ. 19.
8. पांडेय, रवि कांत, पॉलिटिकल पार्टिसिपेशन थ: कलेक्टिव एक्शन: ए स्टडी ऑफ जीविका विमेन इन बिहार, एडवांस्ड इंटरनेशनल जर्नल फॉर रिसर्च, खंड 6, अंक 6, 2025, पृ. 14.
9. पालायी, अजेश, प्रमोद कुमार एवं रवींद्र नाथ पड़रिया, डिटरमिनेंट्स ऑफ विमेन'स पार्टिसिपेशन इन सेल्फ–हेल्प ग्रुप लेड माइक्रोफाइनेंस प्रोग्राम ऑफ बिहार :रल लाइवलीहुड्स प्रमोशन सोसाइटी, इंडियन जर्नल ऑफ एक्सटेंशन एजुकेशन, खंड 54, अंक 4, 2018, पृ. 114दृ116.
10. कुमार, सुमन एवं आशीष रंजन सिन्हा, विमेन एम्पावरमेंट थ: पार्टिसिपेशन इन सेल्फ–हेल्प ग्रुप्स इन बिहार, इंडिया: ए पार्टियल लीस्ट स्क्वेयर्स स्ट्रक्चरल इक्वेशन

मॉडलिंग एप्रोच, इंटरनेशनल रिव्यू ऑफ मैनेजमेंट एंड मार्केटिंग, 2026, पृ. 12.
11. सेन, इमान एवं एम. आर. शरण, द इम्पैक्ट ऑफ विमेन्स सेल्फ–हेल्प ग्रुप्स ऑन इलेक्टोरल पार्टिसिपेशन: एविडेन्स फ्रॉम इंडिया, कार्य–पत्र, 2024, पृ. 44–45
12. शुक्ल, डी. एम., पॉलिटिकल सोशलाइजेशन एंड विमेन वोटर्स: ए केस स्टडी ऑफ कोडरमा कॉन्स्टिट्यूएन्सी, अनमोल पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 1987, पृ. 207.
13. फिलिप्स, जोनाथन, सोलेदाद आर्टिज प्रिलामैन एवं सोमर ब्रायंट, विमेन ऐज एजेंट्स ऑफ चेंज: हाउ हैज विमेन्स पॉलिटिकल मोबिलाइजेशन रिस्ट्रक्चर्ड पॉलिटिकल नेटवर्क्स एंड चेंज्ड लोकल गवर्नेंस?, इंटरनेशनल ग्रोथ सेंटर, पृ. 18.
14. विमेन इन स्टेट पॉलिटिक्स, :टलेज, 2024, विशेष रूप से बिहार संबंधी अध्याय, पृ. 349.
15. इंटरनेशनल ग्रोथ सेंटर, जेंडर इक्वैलिटी एंड प्रॉस्पेक्ट्स फॉर गुड गवर्नेंस, इंटरनेशनल ग्रोथ सेंटर, लंदन, पृ. 19–20.
16. बिहार सरकार, बिहार मानव विकास रिपोर्ट, पटना, योजना एवं विकास विभाग, 2007, पृ. 300.
17. वही, पृ. 400.
18. वही, पृ. 150.
19. वही, पृ. 99दृ100.
20. वही, पृ. 248दृ250.
21. भारत निर्वाचन आयोग, बिहार विधानसभा निर्वाचन सांख्यिकीय रिपोर्ट, नई दिल्ली, विभिन्न वर्ष, पृ. 500.
22. वही, पृ. 398.
23. भारत निर्वाचन आयोग, बिहार विधानसभा निर्वाचन 2025: मतदान सहभागिता संबंधी रिपोर्ट, नई दिल्ली, 2025, पृ. 25.
24. भारत निर्वाचन आयोग, इलेक्शन एटलस 2024, नई दिल्ली, 2024, पृ. 104दृ106.
25. वही, पृ. 238.
26. पांडेय, रवि कांत, पूर्वोक्त, पृ. 243–245.
27. भारत सरकार, राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षणदृ5, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, नई दिल्ली, 2021, पृ. 699.
28. भारत सरकार, जनगणना 2011 प्राथमिक जनगणना सारणी, भारत के महापंजीयक एवं जनगणना आयुक्त, नई दिल्ली, 2011, पृ. 487.
29. देशपांडे, राजेश्वरी, पूर्वोक्त, पृ. 300.
30. देशपांडे, राजेश्वरी, पूर्वोक्त, पृ. 20.
31. देशपांडे, राजेश्वरी, पूर्वोक्त, पृ. 18.
32. वही, पृ. 250.
33. चिब्बर, प्रदीप के., व्हाई वीमेन वोट: इश्यूज एंड आइडियोलॉजी इन द इंडियन इलेक्टोरल सिस्टम, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, कैम्ब्रिज, पृ. 345
34. जेनसेनियस, फ्रांसिस्का आर., सोशल जस्टिस थ्रू इंक्लूजन: द कॉन्सिक्वेंसेज ऑफ ग्रुप–डिफरेंशियल प्रतिनिधेशन इन इंडिया, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली, पृ. 786.
35. बासु, अमृता, विमेन, जेंडर एंड पॉलिटिक्स इन इंडिया, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली, पृ. 326–327.
36. फिलिप्स, ऐन, द पॉलिटिक्स ऑफ प्रेजेन्स, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, ऑक्सफोर्ड, 1995, पृ. 209.
37. शुक्ल, डी. एम, पूर्वोक्त, पृ. 323.